नजफगढ़ नाले को स्वच्छ करने से निर्मल होगी यमुना नदी

संतोष कुमार सिंह • जागरण

- इस बड़े नाले से प्रतिदिन 2,076 मिलियन लीटर गंदा पानी पहुंचता है नदी में
- एक एसटीपी और 11 डीएसटीपी से इसके पानी को किया जाएगा साफ

नई दिल्ली: साहिबी नदी जिसे नजफगढ़ नाला कहा जाता है, को साफ किए बिना यमुना को स्वच्छ व अविरल नहीं किया जा सकता है। क्योंकि यह नाला यमुना में 70 प्रतिशत प्रदूषण के लिए जिम्मेदार है। इसे ध्यान में रखकर दिल्ली सरकार ने इस नाले की सफाई का कार्य शुरू किया है। सीवेज उपचार संयंत्र (एसटीपी) व विकेंद्रीकृत सीवेज उपचार संयंत्र (डीएसटीपी) बनाकर इसके पानी को उपचारित किया जाएगा, जिससे नदी में गिरने वाले गंदे पानी को रोका जा सके।

जल बोर्ड के अधिकारियों के अनुसार 22 बड़े नालों से यमुना में प्रतिदिन लगभग 3,400 मिलियन लीटर प्रतिदिन (एमएलडी) पानी पहुंचता है। इसमें से सिर्फ नजफगढ़ नाले का 2,076 एमएलडी पानी होता है। इसमें से बड़ी मात्रा में अनुपचारित पानी यमुना में गिर रहा है। साहिबी रिवर मिशन से स्थिति सुधारने की योजना तैयार की गई है। इसके अंतर्गत नजफगढ़ नाले की सफाई और जल गुणवत्ता में सुधार लाने के लिए कार्य किया जा रहा है। पहले चरण में 57 किलोमीटर लंबे नाले के तिमारपुर से पंजाबी बाग तक के 11 किलोमीटर के हिस्से को साफ किया जा रहा है। इस हिस्से में 23 छोटे नाले का पानी नजफगढ़ नाले में गिरता है। एसटीपी व डीएसटीपी से इन छोटे नालों के पानी को उपचारित किया जाएगा।

भारत नगर में नजफगढ़ नाले की सफाई में जुटे कर्मचारी • जागरण आर्काइव

दिल्ली सरकार ने पिछले माह पहली व्यय वित्त समिति की बैठक में यमुना की सफाई के लिए 3,140 करोड़ रुपये की लागत से 27 डीएसटीपी बनाने व अन्य कार्य की घोषणा की थी। इसमें से 14 डीएसटीपी नजफगढ़ नाले के लिए होंगे। 11 डीएसटीपी बनाने की प्रक्रिया शुरू कर दी गई है। दक्षिण-पश्चिम दिल्ली के छावला क्षेत्र में 49.5 एमएलडी क्षमता का एक एसटीपी भी बनाया जा रहा है। इसके साथ ही जाफरपुर, गालिबपुर, खेड़ा डाबर, हसनपुर, काजीपुर, शिकारपुर, सारंगपुर, कैर, ककरोला, कांघेरी और डिचाऊं कलां में डीएसटीपी स्थापित किए जा रहे हैं। इन संयंत्रों का उद्देश्य यह है कि पानी को उसी स्थान पर उपचारित किया जाए जहां वह उत्पन्न होता है, जिससे वह गंदा जल नाले या यमुना तक पहुंच ही न सके।

एसटीपी व डीएसटीपी से नाले के पानी में रसायन आक्सीजन मांग (बीओडी) और कुल निलंबित ठोस (टीएसएस) को मानक के अनुरूप लाना है। बीओडी का तय मानक 30 मिलीग्राम/ प्रति लीटर है लेकिन नजफगढ़ नाले का लगभग 100 मिलीग्रीम/ प्रति लीटर है। इसी तरह से टीएसएस 100 मिलीग्रीम/ प्रति लीटर होना चाहिए, लेकिन इस नाले में यह इससे अधिक है। इसके मानक के अनुरूप होने से यमुना की जल गुणवत्ता में महत्वपूर्ण सुधार आने की उम्मीद है। उपचारित जल का उपयोग सिंचाई, बागवानी और जलाशयों के पुनर्जीवन में किया जाएगा। इससे पेयजल की उपलब्धता बढ़ने के साथ ही भूजल स्तर में सुधार हो सकेगा।

nwda.gov.in